वृक्षों की छांव आपको बना सकती है रोगी

* हानिकारक वृक्षों के विषय में छत्तीसगढ़ का पारंपरिक ज्ञान

* 60 से अधिक हानिकारक वृक्षों की अब तक पहचान

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि विश्व को '' ट्री शेड थेरेपी''अर्थात् वृक्षों की छांव की सहायता से रोगों की चिकित्सा के विषय मे बताने वाले राज्य के पारंपरिक चिकित्सकों से वृक्षों को भी पहचानते है जिनकी छांव मनुष्यों की लिये हानिकारक होती है। पारंपरिक चिकित्सक ऐसे वृक्षो को घरों के आस-पास लगाने की सलाह नही देते है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि भेलवा नामक वृक्ष की छांव को नरहरपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक त्वचा रोग का जनक मानते है। त्वचा रोगियों को इस वृक्ष से दूर रहने की सलाह दी जाती है। यह आश्चर्य का विषय है कि पारंपरिक चिकित्सक इस वृक्ष के विभिन्न भागों का प्रयोग त्वचा रोगों की चिकित्सा मे करते है। इमली (अमली) के वृक्षों की छांव को प्रचान - चिकित्सा ग्रंथों मे हानिकारक बताया गया है। छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक इससे सहमत है और इमली को वनों के लिये उपयोगी वृक्ष मानते है। इस वृक्ष को मानव आबादी से दूर रखा जाता है। राजनांदगांव क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक पडरी के वृक्षों की छांव को स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से सही नही मानते है। उनका मानना है कि इस वृक्ष की छांव मे एक- दो घंटे बैठने मात्र से हाथ पैर के जोड़ो मे दर्द शुरु हो जाता है। सर्पविष की चिकित्सा मे इस वृक्ष के विभिन्न भागों विशेषकर छाल और फल्लियों का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सक करते है। गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को कुचला नामक वृक्ष की छांव से बचने की सलाह दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक दते है। कुचला का प्रयोग भी औषधि के रुप मे पारंपरिक चिकित्सक और श्वान - विष के रुप मे वनवासी करते है। कम जीवनी शक्ति वाले वृद्धों को कांकेर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक चार के वृक्षों की छांव से दूर रहने की सलाह देते है। यह वृक्ष शारीरिक कमजोरी पैदा करता है। ठंड जनित रोगों से प्रभावित लोगों को रेंगाखार के पारंपरिक चिकित्सक शीशम के वृक्षों की छांव से बचने की सलाह देते है। पंकज अवधिया ने अब तक 60 से भी अधिक हानिकारक छांव वाले वृक्षों की सूची तैयार कर इनसे संबंधित पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया है। उनका मानना है कि इस पारंपरिक ज्ञान की वैज्ञानिक व्याख्या की आवश्यकता है। यह पारंपरिक ज्ञान उन शोधकर्ताओं के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है जो कि सामाजिक वानिकी मे औषधि वृक्षों को स्थान देना चाहते है।